आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2738 • उदयपुर, शुक्रवार 24 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

बल्लारी (कर्नाटक) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 जून 2022 को एस.एस. जैन संघ जैन मार्केट, बल्लारी में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री गुरु पुष्कर जैन सेवा समिति,बल्लारी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 268, कृत्रिम अंग माप 91, कैलिपर माप 37 की सेवा हुई तथा 14 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् केवल चंद जी विनायिका (अध्यक्ष, आर.एस जैन संघ) अध्यक्षता श्रीमान् कमल जी जैन (अध्यक्ष, तेरापंथ धर्मसंघ), विशिष्ट अतिथि श्रीमान आनन्द जी मेहता (भामाशाह , समाजसेवी), श्रीमान् प्रणीण जी पारख (अध्यक्ष, श्री गुरु पुष्कर जैन सेवा समिति), श्रीमान् अशोक जी भण्डारी (उपाध्यक्ष, श्री गुरु पुष्कर जैन सेवा समिति)।

डा.अजमुद्धीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. नेहाश जी मेहता (पी.एन.डो.), डॉ. नाथुसिंह जी, डॉ. गोविन्द सिंह जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी उप प्रभारी) श्री महेन्द्र सिंह जी रावत (आश्रम प्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

बिजनोर (उत्तरप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता –मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 जून को डिग्री कॉलेज नटहौर बिजनोर (उत्तरप्रदेश) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री अशोक जी अग्रवाल सा. विष्णु मेडिकल रहे। शिविर में रजिस्ट्रेशन 28, कृत्रिम अंग वितरण 20, कैलिपर वितरण 11 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि ए.डी.जी.पी. ब्रजलाल जी (जिलाधिकारी सांसद बिजनोर), अध्यक्षता श्रीमान् ओमकुमार जी (विधायक नटहौर), विशिष्ट अतिथि श्री राकेश जी चौधरी (ब्लॉक प्रमुख नहटौर), श्रीमान् मूलचंद जी (विभाग संपर्क प्रमुख), श्रीमान् मुखेन्दर जी त्यागी (जिला मंत्री) , श्रीमती लीना जी सिंघल (पूर्व चेयरमेन धामपूर) रहे।

श्री भंवरसिंह जी (टेक्निशियन) श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री हरिश जी रावत, श्री देवलाल जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक : 26 जून, 2022

▪ बजरंग आश्रम, हॉसी, हरियाणा

▪ रामा विष्णु सरस्वती शिशु मंदिर चांदपुर चौराहा, नहटौर, उ.प्र.

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

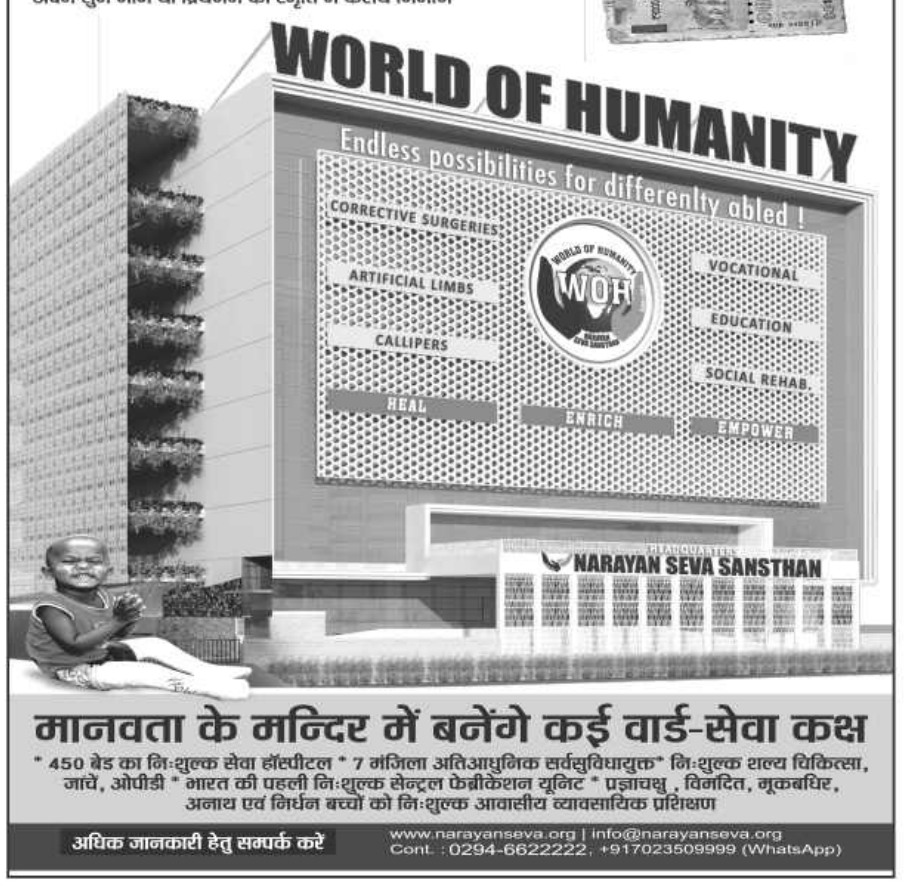

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष

* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. :0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

जीवन में व्यवहार सुधर जाये
और रंग चोखो जावे।
अन्दर का आधार का आधार सुधर
जाये तो, तूं सोणो बन जावे।।

अंगदजी सोणा बन गया। युवराज अंगदजी की जय जयकार होने लगी। और भगवान श्रीराम ने व्यूह रचना की। सुग्रीवजी आये, विभिशणजी आये, हनुमानजी बिराजे। अब दूत भी भेज दिया। रावण का गर्व दूर नहीं हुआ। अब चार किले हैं तो अब सेना को चार भागो में बांटा गया,चार सेनापति और चार सेनापति दौड़े और किलों की तरफ पत्थर डाल रहे हैं। ये तो लंकाकाण्ड है भाया। आपणे घर में लंकाकाण्ड मती कर जो। आपने घर ने बालवत स्वभाव रखने बालकाण्ड वणाई लिजो। अखण्ड पुरशार्थ करके अयोध्याकाण्ड वणाई लिजो और अरण्डकाण्ड में मुनियों के समीप रहना कर लेना।

महिमजी– जी गुरुदेव। इसी पावन प्रसंग के साथ जोधपुर से परम् आरदणीय श्रीरामप्रसादजी महाराज साहब।

गुरूदेव– रामजी, राम रामवाला।

रामप्रसादजी महाराज– परहित बस

जिनके मन मांही, ता कहूं जग
दुर्लभ कछु नाई।
परिहत सरिस धर्म नहीं भाई
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।

ऐसी भावना को लेकर हमारे राजस्थान के उदयपुर नगरी में कैला ाजी मानव ने जो नारायण सेवा संस्थान को शुरू किया। और आज उस नारायण सेवा संस्थान में इतना विशालकाय कार्य हो रहा है। पूरे विश्व के विकलांग यहाँ नारायण सेवा संस्थान के उदयपुर पहँचते है।

गुरुजी– ये रामप्रसादजी पूज्य महाराजश्री, सूरसागर बड़ा रामद्वारा जोधपुर के परम तेजस्वी। राम के प्रसाद, आपके तो श्रीमुख से रामजी राम रामजी राम रामजी राम। कहते हैं – राम राम बोलते है तो दो बार बोला जाता है। राम राम सा तो राम राम रामसा की कृपा से ही कथा स्वाध्याय करवा रो सुअवसर प्राप्त वियो। पछे मेघनादजी आवे और मेघनादजी देखे कि– म्हारा सैनिक तो मारीया जा रहा है। कुछ सैनिक भागवा भी लाग ग्या। तो रावण कियो कि– कोई भागी जायगा तो मैं दुधारी तलवार से उसका सिर उड़ा दूंगा। तो राक्षसों ने सोचा कि–इधर भागेंगे तो भी मरेंगे और रावण के हाथ से मरेंगे तो अच्छा है तो रामजी के दूतों के हाथ से वध होना। राक्षसों को भी भगवान के प्रति प्रेम हो गया। ये अद्भुत कथा हुई।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें
कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

हादसों से लाचार जिंदगी फिर चल पड़ी

बीकानेर – श्रीरामलाल–सूरजदेवी रांका चेरीटेबल ट्रस्ट बीकानेर राजस्थान के सहयोग से 10 अप्रैल को हंसा गेस्ट हाऊस में सम्पन्न शिविर में 276 दिव्यांगजन का पंजीयन हुआ। जिनमें से हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा ने जांच कर 19 का चयन निःशुल्क ऑपरेशन के लिए किया, जबकि पीएण्डओ डॉ. गौरव जी तिवारी व टेक्नीशियन भगवती लाल जी ने 35 दिव्यांगजन का कृत्रिम अंग व 17 का कैलिपर बनाने के लिए माप लिया। शिविर के मुख्य अतिथि समाज सेवी श्री हंसराज डागा व विशिष्ट अतिथि सर्वश्री सुभाष जी गोयल, ट्रस्टी हनुमल जी रांका, शाखा प्रेरक मुकेश जी जोशी व श्रीमति मधु जी शर्मा थे। अध्यक्षता पूर्व चेयरमैन श्री महावीर जी रांका ने की। शिविर प्रभारी मुकेश जी शर्मा ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया।

हीरा नगर – जय बाबा नीलकंठ सेवा मंडल हीरा नगर जम्मू में श्री अशोक जी ताड़िया के सहयोग से 10 अप्रैल को सम्पन्न शिविर में 85 दिव्यांगजन का रजिस्ट्रेशन हुआ। जिनमें से पीएण्डओ डॉ. तपस पी. बेहरा व टेक्नीशियन नरेश जी वैष्णव ने 15 दिव्यांगजन के कृत्रिम अंग व 19 के कैलिपर बनाने का माप लिया। निःशुल्क ऑपरेशन के लिए 5 चयनित किए गए। शिविर प्रभारी अखिलेश अग्निहोत्री ने संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी। मुख्य अतिथि हीरा नगर के डीसीसी श्री अभिनन्दन जी शर्मा थे। अध्यक्षता नगर निगम के महापौर श्री हरजेन्द्र सिंह जी ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री राकेश जी शर्मा, रूपलाल जी, रामदयाल जी शर्मा व श्रीमती भारती शर्मा थे।

सिमलीगुड़ा – लॉयन्स क्लब, सिमलीगुड़ा ओडिशा के सहयोग से 12 अप्रैल को कल्याण मण्डपम् में आयोजित शिविर में 59 दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग व 21 को कैलिपर वितरित किए गए। पीएण्डओ डॉ. रामनाथ जी ठाकुर व टेक्नीशियन नाथूसिंह जी ने माप के अनुसार कृत्रिम अंग व कैलिपर पहनाने का कार्य किया। शिविर प्रभारी लाल सिंह जी भाटी ने बताया कि शिविर में कुल 80 दिव्यांगजन का रजिस्ट्रेशन हुआ। मुख्य अतिथि सिमलीगुड़ा नगरपालिका के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार जी पात्रा थे। विशिष्ट अतिथि श्री मनोज जी पात्रा, आनन्द जी सेनापति व श्रीमती सुमन्या जी ने की। अध्यक्षता लॉयन्स क्लब के अध्यक्ष श्री आनन्द जी पाटवानिया ने की। संचालन में सह प्रभारी मुकेश जी त्रिपाठी ने सहयोग किया।

मालेरकोटला – महावीर इन्टरनेशनल एवं मानव निश्काम सेवा समिति एवं गुरू सेवक परिवार मालेरकोटला (पंजाब) के सहयोग से 17 अप्रेल को श्री हनुमान मंदिर (तालाब बाजार) परिसर में सम्पन्न शिविर में कुल पंजीकृत 256 दिव्यांगजन की पीएण्डओ डॉ. गौरव जी, श्रीमती चित्रा जी व टेक्नीशियन नरेश जी वैश्णव ने जांच कर 82 के कृत्रिम अंग व 15 के कैलिपर बनाने के लिए माप लिए जबकि डॉ. सिद्धार्थ लाम्बा ने निःशुल्क ऑपरेशन के लिए 17 का चयन किया। मुख्य अतिथि प्रधान श्री लोकेश जी जैन थे। अध्यक्षता दिनेश इण्डस्ट्रीज के श्री नरेश जी सिंघला ने की। विशिश्ट अतिथि के रूप में मंचासीन थे–सर्वश्री रमेश जी जैन लाडिया, राजेन्द्र सिह जी, प्रदीप जैन व मोहन श्याम। संचालन अखिलेश जी अग्निहोत्री व आभार ज्ञापन सुनील जी श्रीवास्तव ने किया।

सम्पादकीय

'कर्म प्रधान विश्व करि राखा' का स्मरण आते ही कर्म गति के बारे में ध्यान आता है। कर्म अच्छे हों या बुरे उनका फल तो अवश्य ही मिलता है। कहा जात है कि कर्मों का संबंध केवल इसी जन्म तक सीमित नहीं है। ऐसा भी सुना है कि 'करम गति टारे नहीं टरे।' तो फिर कर्मों पर हमारा ध्यान इतना क्यों नहीं रहता जितना अपेक्षित है। यह तो तय है कि कारण होने पर ही कार्य होता है पर उस कारण पर हमारा कितना वश है ?

इन सब बातों का एक ही मार्ग है कि हम चाहे सिद्धांत रूप में कर्म के बारे में अधिक ज्ञान अर्जित करें या न करें पर कर्म करने में तो सजगता रखें ही।इस सजगता का परिणाम यह होगा कि हम कर्मबंधन या बुरे कर्म से बचते रहेंगे। इसका सरल सा उपाय यह भी हो सकता है कि हमारे द्वारा .तकर्मों का समय–समय पर स्वयं ही विश्लेषण करते रहें। हम जो भी कर्म कर रहे हैं, क्या यही कर्म कोई दूसरा करता तो हमें शुभ लगता या अशुभ। यदि हमारी अनुभूति आती है कि अशुभ लगता तो हम इससे तुरंत बचें। शुभ या अशुभ कभी–कभी प्रासंगिक हो सकता है पर ज्यादातर तो सर्वमान्य ही होता है। इसलिये किसी भी कर्म या क्रिया से पूर्व स्वानुभव को संयोजित करना हमारे लिये लाभदायी ही होगा।

कुछ काव्यमय

जो चलता, चलता जाता है।
कहते हैं कि वही एक दिन
अपनी वह मंजिल पाता है।
जिसने हिम्मत नहीं हारी है।
वह सत्वर चलता जायेगा,
होना सफल कहाँ भारी है।
मन में धुन यह बनी रहे।
मुझे सफल होना ही है अब,
संकल्पी मुट्ठी है तनी रहे।

अपनों से अपनी बात

मीठी वाणी और सद्व्यवहार

जावेद मियाँ के पड़ोसी जाहिद भाई शहद बेचकर अमीर हो गए। एक दिन जावेद मियाँ अपनी बीवी से बोले. .. मैं भी कल से साइकिल के पंक्चर निकालने का काम छोड़.. शहद बेचूंगा। बीवी ने समझाया.... शहद का धंधा बाद में करना.... पहले जरा सा शहद सा मीठा बोलना तो सीख लो। बीवी की बात को अनसुना कर जावेद लम्बी तान कर सो गए। दूसरे दिन सवेरे उठे और शहद के थोक व्यापारी से शहद का कनस्तर उधार लेकर ..... .शहद लो शहद.... पुकारते कस्बे के गली मोहल्ले में घूमते रहे .....मगर उनकी कर्कश आवाज के कारण किसी ने उनकी तरफ देखा भी तो मुँह

मोड़ लिया.....।

शाम को हारे थके ज्यों–का –त्यों कनस्तर उठाए वे घर पहुँचे और मुँह लटका कर बैठ गए। बीवी ने उन्हें फिर समझाया कि जो खुशमिजाज और मीठा बोलते हैं, उनकी तीखी मिर्च भी हाथों–हाथ बिक जाती है..... जबकि कर्कश बोलने वालों से लोग 'शहद' भी खरीदना पसन्द नहीं करते।

इस प्रतीकात्मक कहानी का सार यही है कि यदि हम विनम्र हैं तो हमारे साथ दूसरों का व्यवहार भी नम्र होगा। नम्रता वाणी से झलकती है। मीठी वाणी बोलने वाले की इन्सान से तो क्या....ईश्वर से भी निकटता बढ़ जाती है। लाठी और पत्थर की चोट से भी ज्यादा घातक होती है' अपशब्द' अथवा अहंकार युक्त वाणी की चोट। बरसों पुराने सम्बन्ध भी यह झटके से तोड़ देती है.....। सज्जनता की परीक्षा पहले वाणी फिर व्यवहार से होती है.....आपका दृष्टिकोण सकारात्मक होगा तो वाणी में कर्कशता और 'मूड' में उखड़ापन आ ही नहीं सकता। मीठी वाणी और सद्व्यवहार का फल भी सदैव मीठा होता है। यह व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला भी है।

–कैलाश 'मानव'

संयम और विवेक

एक व्यक्ति एक प्रसिद्ध संत के पास गये। बोले गुरुदेव मुझे जीवन के सत्य का पूर्ण ज्ञान हैं। मैंने शास्त्रों का काफी ध्यान से अध्ययन किया है फिर भी मेरा मन किसी काम में नहीं लगता। जब भी कोई काम करने के लिये बैठता हूँ तो मन भटकता है। आप और हमारे साथ भी ऐसा होता है। तो मैं उस काम को छोड देता हूँ। इस अस्थिरता का कारण क्या है? संत ने उसे रात तक इंतजार करने के लिये कहा। रात होने पर वो उसे एक झील के किनारे ले गये। झील के अंदर चांद के प्रतिबिम्ब को दिखाकर बोले– एक चांद आकाश में और एक झील में। तुम्हारा मन इस झील की तरह है। तुम्हारे पास ज्ञान तो है लेकिन तुम उसको इस्तेमाल करने

की बजाय, तुम उसे सिर्फ मन में लाकर बैठे हो। ठीक उसी तरह जैसे झील असली चांद का प्रतिबिम्ब लेकर बैठी है। तुम्हारा ज्ञान तभी सार्थक हो सकता है। जब तुम उसे अपने व्यवहार में संयमता और एकाग्रता के साथ अपनाने का प्रयास करोगे। झील का चांद तो मात्र एक भ्रम है तुम्हें कार्यो में मन लगाने के लिये, आकाश के चन्द्रमा की तरह बनना है। झील का चांद तो पानी में पत्थर गिराने पर हिलने लगता है। जिस तरह से तुम्हारा मन जरा–जरा सी बातों पर डोलने लगता है ना? तुम्हें अपने ज्ञान और विवेक को जीवन में नियमपूर्वक लाना होगा। अपने जीवन को सार्थक और लक्ष्य हासिल करने में लगाओगे, खुद को आकाश के चांद की तरह पाओगे। शुरू में थोडी परेशानी आयेगी पर कुछ समय बाद ही तुम्हें इसकी आदत हो जायेगी। इसलिये आप और हम ध्यान रखें कि जैसे मन नहीं लगता तो मन लगाने के लिये सबसे बड़ा एक तरीका है कि आप उसमें खो जायें। आप उसको समझने की कोशिश करें। उसमें विवेक लगायें, उसमें संयम रखें। क्योंकि अगर आप विवेक नहीं लगायेंगे, आप रटा मारेंगे। आप किसी चीज को ऐसे याद करने की कोशिश करेंगे रटा मारकर तो नहीं होगी। लेकिन आप उसे समझकर याद करेंगे तो तुरन्त याद हो जायेगी। इसलिये ध्यान रखें संयम और विवेक का जो कोम्बीनेशन है वो बराबर चलना चाहिये। **– सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश, चैनराज के पास गया, उनका हाथ अपने हाथ में लिया तो चैनराज बुदबुदाये –अपना हॉस्पीटल अधूरा पड़ा है, लंगड़ा हॉस्पीटल कैसे चलेगा, मैं पैसों का इन्तजाम कराउंगा। कैलाश चैनराज के समर्पण और सेवाभाव को देख रोने लगा। मृत्यु शैया पर पड़े व्यक्ति की जिजीविषा देख वह अपने आंसू रोक नहीं पाया। अस्पताल पहुंचते ही जब वह डॉक्टर से मिला तो उसने बताया था कि इनका अंतिम समय है, कोई उम्मीद अब शेष नहीं है, घन्टा दो घन्टा निकाल ले इससे अधिक नहीं। कैलाश ने चैनराज के हाथ पर हाथ फेरते हुए कहा कि आप ठीक हो जायेंगे, किसी तरह की चिन्ता नही करें। जब उसके आंसू नहीं थमे तो वह बाहर निकल आया। लाचार, बेबस कुछ भी कर पाने में असफल। उसके हाथ में था भी क्या जब डॉक्टर ने ही जवाब दे दिया। आज तो सिर्फ प्रभु की आराधना ही बची थी। यह ख्याल आते ही मानो उसे प्रेरणा मिल गई। चैनराज सदैव चन्द्र प्रभु के मन्दिर में पूजा करने जाते थे। कैलाश उसी मन्दिर में पहुँचा और प्रार्थना करने लगा–भगवान ! इन्हें बचा लो। उसकी आंखों से अश्रुओं की अविरल धारा बहे जा रही थी और वह प्रार्थना किये जा रहा था। रात्रि की 12 बज गई थी, चारों तरफ सन्नाटा था मगर वह भगवान के सामने से नहीं हटा। थोड़ी देर में उसके अश्रु थम गये, शांति का एहसास हुआ तो वह मंदिर से नीचे उतरा।

सामने ही एक एस.टी.डी. पीसीओ था। इतनी रात्रि के बावजूद भी यह खुला था। कैलाश ने यहां से उदयपुर फोन किया कि सेवाधाम में बने शक्तिपीठ मंदिर में अखण्ड जाप शुरू कर चैनराज लौढ़ा के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की जाये। इस मन्दिर में भगवान कृष्ण, महावीर, बुद्ध, ईसा, नानक सब की मूर्तियां लगी हुई थी। इसके बाद वह वापस अस्पताल लौट आया।

डॉक्टरों ने घन्टे दो घन्टे का ही समय दिया था, कैलाश को अस्पताल से निकले काफी वक्त हो गया था। उसके मन में धुकधुकी मची थी कि चैनराज कैसे होंगे अस्पताल पहुंचते ही जब दूर से ही सबको सामान्य स्थिति में बातचीत करते देखा तो उसकी जान में जान आई। चैनराज ने पहली रात निकाल ली तो डॉक्टरों को विश्वास हो गया कि प्रारम्भिक खतरा टल गया है।

अंश - 135

5 वर्ष तक के बच्चों का आहार

तेज गर्मी के बीच छोटे बच्चों (पांच साल तक) के आहार को लेकर विशेश सावधानी बरतने की जरूरत होती है। ऐसा इसलिए जरूरी है क्योंकि अधिक गर्मी से पाचन क्रिया पर असर पड़ता है। हैल्दी डाइट न देने से डायरिया की आशंका बढ़ जाती है।

एक साल तक

इन्हें मां के दूध के साथ ही चावल या दाल का पानी, सब्जियों की खिचड़ी, फलों का रस (10–15 एमएल), पका केला आदि दें।

एक साल से अधिक होने पर

इन्हें सूप, चीला चावल, परांठा आदि के रूप में एक कटोरी दाल और दूध, दही, पनीर, चीज या इनसे बनी हैल्दी चीजे दे सकते हैं। इन्हें दिन में दो–तीन बार में 300–400 एमएल दूध दें। एक बादाम व दो किशमिश दें।

2–3 साल हो उम्र

रोज मौसम आधारित एक फल, दो सब्जी व टिक्की, कटलेट, पालक चुकंदर का परांठा और दो बादाम व चार किशमिश दे सकते हैं।

3–5 साल पर

ऐसे बच्चों को सम्पूर्ण आहार के साथ 3–4 बादाम व 5 किशमिश भी खिलाएं। रोज 400–500 एमएल दूध भी दें। रोज एक मौसमी फल भी खिलाएं।

लिक्विड डाइट

बच्चों को गर्मी में उनकी पंसद के आधार पर नींबू, पानी, छाछ, लस्सी आदि देते रहें। उन्हें नियमित अंतराल पर पानी भी पिलाते रहें।

ये भी ध्यान रखें

दो साल तक के बच्चों को घी, तेल या चिकनाई, नमक और चीनी कम से कम मात्रा में देने चाहिए। साथ ही यदि आहार लेने के तुरंत बाद बच्चे को पेटदर्द, उल्टी या अन्य कोई शिकायत हो तो वह आहार रिपिट न करें। बल्कि पहले विशेषज्ञ से परामर्श करें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

मनुभाई ने ज्यूजर्सी न्यूयार्क के पास में अटांर्कटिका में उनके साथ घर में परिवार के साथ ठहराया। एक महिना वहाँ रहे। वहाँ उनकी त्याग–तपस्या ठीक महिने के दरम्यान नरेन्द्रजी हड़पावत साहब डॉक्टर साहब, न्यूयार्क में उनके निवास में जो बिराजे हुए थे। उन्होंने कहा कि– मेरे प्रतापगढ़ में, जो हमारा पैतृक स्थान है, राजस्थान में। प्रतापगढ़ जिले का हैडक्वाटर प्रतापगढ़ उसमें आप सर्जिकल शिविर जो घुटने के बल चल रहे हैं, बैठकर चल रहे हैं जिनके पैरों में कैंचियाँ पड़ी हुई है। जिनका एक पैर बहुत छोटा, एक बड़ा हैं। जिनके पंजे ऊपर आ गये हैं, एड़ी ऊपर आ गयी है। ऐसे बाल–बच्चों का आपॅरेशन करें। वहीं तय हुआ, वहीं से उदयपुर फोन किया, इस सर्जिकल शिविर के लिए। मनुष्य क्या कर सकता है ? इन्सान इस दुनियां में आया है भगवान की परम् कृपा से, माता–पिता की कृपा से। वह कर्म कर सकता है, शुभकर्म कर सकता है। इसीलिये कहा जाता है, भाव अच्छे रखें। मन में रहे ये भाव–सेवा बने स्वभाव। वाणी को मधुर रखें।

ऐसी वाणी बोलिये,
मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे,
आपहुं शीतल होय।।
करें सदा सतकर्म विहसते,
कर्मयोग अपनाना है।

प्रतापगढ़ में भी फिजिकल हैंडिकेप के लिये ऑपरेशन कैम्प हुआ। और हूमड़ों के नोहरे में आचार्यश्री के आशीर्वाद के साथ तीन सौ अस्सी नेत्र रोगियों के ऑपरेशन किये गये। ठाकुरजी ने करवाये। अप्रेल सून 1990 तक गाँवों में, आदिवासी क्षेत्रों में जो सेवाकार्य ठाकुरजी की कृपा से हो पाये। उनका वर्णन लोकेशजी करने जा रहे हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 488 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023